International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 10-01-2021, Accepted: 15-02-2021, Published: 19-02-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 34-38

सामुदायिक कार्यक्रमों में युवाओं की सहभागिता

डॉ. रामफूल जाट
सहायक आचार्य समाजशास्त्र, एस.पी.एन.के.एस. राजकीय महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2021.v3.i1a.93

सारांश
राष्ट्रीय युवा नीति 2014 भारत के युवाओं के समग्र विकास के लिए राष्ट्र की वचन बद्धता को दोहराती है ताकि वे अपनी क्षमता का पूरा लाभ उठा सके और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में उपयोगी रूप से सकारात्मक योगदान दे सके समूह में व्यक्तियों के रूप में परिभाषित करती है। युवा जनसंख्या के अत्यधिक उत्साही और गतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। भारत विश्व के सबसे युवा राष्ट्रों में से एक है जिसकी कुल जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत 35 वर्ष की आयु से नीचे है। 15–29 वर्ष के आयु समूह में युवा कुल जनसंख्या का लगभग 27 प्रतिशत है। इस डेमोग्राफी लाभ को लेने के लिए यह अनिवार्य है कि अर्थव्यवस्था में श्रम बल में वृद्धि का समर्थन करने की योग्यता हो और युवाओं को समुचित शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य जागरूकता और अन्य कारक उपलब्ध हो जिससे वे देश की अर्थव्यवस्था में प्रभावी योगदान दे सके।
भारत सरकार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के माध्यम से युवाओं के लिए कार्यक्रमों पर महत्वपूर्ण निवेश करती है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकारें और कई अन्य प्रतिभागी भी युवा विकास में सहायता देने और उत्पादक युवा सहभागिता बनाने में कार्यरत है। इस शोध पत्र में सामुदायिक कार्यक्रमों में युवाओं की सहभागिता का विश्लेषण में सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा एवं सामुदायिक सक्रियता में नेहरू युवा केन्द्र संगठन एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवाओं के कौशल विकास, सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा, स्वास्थ्य शिक्षा पर्यावरण, समसामयिक समस्याओं पर विशद विश्लेषण एवं उनके द्वारा किये गये कार्यक्रमों का विश्लेषण किया गया है।

कूटशब्दः युवा, सामुदायिक कार्यक्रम, सहभागिता, परम्परा

प्रस्तावना
राष्ट्रीय युवा नीति 2014 में 15 से 29 साल के आयु के लोगों को 'युवा' के तौर पर पारिभाषित किया गया है। हालांकि, युवा को एकसमान समूह नहीं माना जा सकता। विभिन्न सामाजिक कारकों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक योग्यता, अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों के कारण युवाओं के समूह में विविधता होना सामान्य बात है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि धारणाओं और आकांक्षाओं के मामले में भी युवा की राय अलग–अलग होती है।
'युवा' शब्द के तीन साफ अभिप्राय हैं। पहला यह किसी विशेष आयु समूह की बात करता है। दूसरा ऐसे लोगों के समूह की तरफ इंगित करता है, जो शिक्षा और रोजगार के नजरिए से क्षणिक दौर से गुजर रहे होते हैं। और आखिर में युवाओं का अभिप्राय ऐसे समूह से भी है, जिनके जीवन को विशेष तरह के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक–शारीरिक पहलू प्रभावित करते हैं। आकांक्षा समूह के रूप में अस्तित्व बनाये रखता है।
हालांकि, सिर्फ किसी विशेष आयु समूह में होने का अपने आप में ज्यादा मतलब नहीं है। युवाओं के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यह ऐसा आयु समूह है, जो किशोरावस्था से वयस्क की तरफ बदलाव का गवाह होता है और कौशल या शिक्षा से रोजगार की तरफ बढ़ने के दौरे में भी होता है। इस दौर में युवा अपने उद्देश्य एवं आकांक्षाओं को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए खुद को तैयार करते हैं। साथ ही, उन क्षेत्रों की तलाश भी करते हैं, जिनसे वह सार्थक तरीके से जुड़ सकें। युवाओं की गतिविधियों का क्षेत्र व्यापक है – मसलन कई कामकाजी क्षेत्रों से जुड़ी गतिविधियां, सार्वजनिक हित से जुड़ी गतिविधियां स्व–व्यवसाय संभव है कि इस प्रक्रिया के दौरान उसे कौशल संबधी प्रशिक्षण या अपनी पसंद की शिक्षा मिले और वह अपनी पसंद के व्यवसाय के जरिए आजीविका की व्यवस्था करने का प्रयास करे। काम–धंधे में घुस जाने के बाद वह अपनी मेहनत के द्वारा सफल होने और प्रगति करने का प्रयास कर सकता है। और इस दौर में उसके जीवन में सामाजिक–सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक शारीरिक मामलों का जुड़ाव पहले से कहीं ज्यादा होने लगता है। कभी–कभी इस तरह का जुड़ाव या सक्रियता काफी महंगी पड़ती है। इसके कमजोर नतीजों के कुछ मामले भी सामने आए हैं। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया समाजिकरण का हिस्सा है जो समकालीन परिवेश का मूल्यांकन करता है।

समूह के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्र
भारत सरकार ने राष्ट्रीय युवा नीति 2014 में युवाओं के इस विशेष पहलू को मान्यता दी है। यह लक्ष्यों और प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करता है, जो इस तरह हैः–
प्राथमिकता वाले सभी क्षेत्र अहम हैं और युवाओं के संपूर्ण और रचनात्मक विकास पर काम किए जाने की जरूरत है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, खेल आदि पर काफी कुछ लिखा जा चुका है और आगे भी यह प्रक्रिया जारी है। यहां प्राथमिकता वाले सिर्फ दो क्षेत्रों के बारे में चर्चा की जाएगी :–
1. सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा।
2. सामुदायिक सक्रियता।

'राष्ट्रीय स्वामित्व की भावना विकसित करने के लिए सामाजिक मूल्य सिखाने और सामुदायिक सेवाओं को बढ़ावा देने' के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकता वाले दो क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है।

सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा
युवा बहुत उपयोगी मानव संसाधन हैं और अनुभव के साथ ही वे जीवन के अपने–अपने क्षेत्रों में अग्रणी बन जाएंगे। संस्कृति, नस्ल, भाषा, समाज एवं धर्म के मामले में भारत विविधता वाला देश है। भौगोलिक दृष्टि से भी यहां काफी विविधता है। लिहाजा, अलग–अलग समाज अलग–अलग तरीके से भौगोलिक चुनौतियों से सामना करते हुए अपनी जीवन शैली निर्धारित करते हैं।

हालांकि, इन सभी विविधताओं के बावजूद देश के अलग–अलग क्षेत्रों और पहचानों को एक सामूहिक आधार जोड़ता है। इसका श्रेष्ठ उदाहरण शायद हमारे महाकाव्य (रामायण और महाभारत) हैं, जिनका सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है और मुख्य कहानी एक ही है। सिर्फ उप–कहानियां (महाभारत में इसे उपाख्यान कहा गया है) में एक ही विषय पर अलग–अलग तरह की छाया देखने को मिल सकती है। यदि हम समकालीन समय की बात करें, तो सूचना–प्रौद्योगिकी का प्रयोग, युवाओं की सामान्य धारणाएं और उनकी विभिन्न समस्याओं की स्थिति देशभर में एक जैसी ही है। आज का युवा विकास, संचार, जुड़ाव–सक्रियता, अपनी संभावनाओं को दिखाने के लिए अवसरों के बारे में एक ही अंदाज में बात करता है, चाहे वह देशभर के किसी भी इलाके या जाति–धर्म से सम्बन्ध रखता हो। यह समानता इसलिए है, क्योंकि एक राष्ट्र के तौर पर भारत की अलग संस्कृति है और यह निश्चित परंपराओं एवं रिवाजों पर आधारित है। इन परंपराओं और रिवाजों को वर्षों से संरक्षित रखा गया है और इनमें सामाजिक मूल्य मौजूद हैं। ये सामाजिक मूल्य आम तौर पर भारतीय समाज में और खास तौर पर युवाओं के लिए एक–दूसरे को जोड़ने में सेतु का काम करते हैं। विविधता में एकता को दर्शाते है।

सामुदायिक गतिविधियां

प्राथमिकता वाला दूसरा क्षेत्र युवाओं के लिए सामुदायिक सक्रियता है। यह सामाजिक मूल्यों के अलावा समाज के सामाजिक–आर्थिक ढांचे से भी निकलता है। दरअसल, सामुदायिक जुड़ाव का मामला अलग–अलग तरह की गतिविधियों के रास्तों से गुजरता है। जाहिर तौर पर युवा जनसंख्या के सबसे बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें सामुदायिक सेवाओं के लिए एकत्रित किया जा सकता है एवं जनसहभागिता के साथ जोड़ा जा सकता है।

युवा मामलों के विभाग के तहत मुख्य दो संस्थान हैं – नेहरू युवा केंद्र संगठन (एनवाईकेएस) और नेशनल सर्विस स्कीम (एनएसएस), जो स्वैच्छिक आधार पर युवाओं के लिए सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं। और मुख्य तौर पर यह युवाओं के बीच स्वेच्छा से काम करने की भावना बढ़ाने पर आधारित है। यह युवाओं के लिए स्वैच्छिक आधार पर सामुदायिक सक्रियता का विषय है। इस तरह की स्वैच्छिक सेवा भावना इस तरह की सेवाओं के लिए श्रेयस्कर उपाय है, जिसका प्रदर्शन कई तरह की गतिविधियों में किया जा चुका है। एन.एस. एस. एवं एन.वाई.के.एस. के कार्यकर्ताओं ने गैर–परंपरागत क्षेत्र की गतिविधियों पर भी जोर दिया है। और विभिन्न समस्याओं से निपटने पर युवाओं के इस जवाबी तंत्र में सामाजिक मूल्य सामने आते हैं। मसलन इस तरह की गतिविधियों के जरिए सामाजिक जुड़ाव देखा जा सकता है जो युवाओं को जनसहभागिता के साथ मिलकर समस्याओं के निदान में सहयोगी बनाता है।

नेहरू युवा केंद्र संगठन (एनवाईकेएस)

नेहरू युवा केंद्र संगठन को 1972 में शुरू किया गया था। यह दुनिया के सबसे बड़े युवा संगठनों में से एक है। नेहरू युवा केंद्र संगठन में फिलहाल 1.29 लाख युवा क्लबों के जरिए 87 लाख युवा पंजीकृत हैं। नेहरू युवा केंद्रों के जरिए एनवाईकेएस की मौजूदगी 623 जिलों में है। इसका उद्देश्य युवाओं में शख्सियत और नेतृत्व के गुण विकसित करना और उन्हें राष्ट्र–निर्माण की गतिविधियों से जोड़ना है। नेहरू युवा केंद्र संगठन की गतिविधियों को हर जिले में जिला युवा समन्वयक के जरिए संचालित किया जाता है और हर ब्लॉक में 2 राष्ट्रीय युवा कार्यकर्ता होते हैं। इसके अलावा, नेहरु युवा केंद्र संगठन के राज्य स्तर पर 29 जोनल ऑफिस हैं और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

इस संगठन की कई सारी गतिविधियों में से यहां कुछ के बारे में संक्षेप में बताया गया है:

युवा नेतृत्व और सामुदायिक विकास के बारे में प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं की क्षमताओं को बढ़ाना है, ताकि वे नेतृत्व वाली भूमिका में आकर दूसरों को सार्थक जीवन जीने में मदद कर सकें और राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। यह 5 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम होता है। 2017–18 में इस तरह के 450 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और इसमें 19,000 से भी अधिक युवाओं को शामिल किया गया।

युवा सम्मेलन और युवा कृति

सभी जिला नेहरू युवा केंद्रों में सालाना इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं उत्पाद दिखाने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए मंच उपलब्ध करना है। इसके अलावा, उन्हें इसके जरिए अपने अनुभव साझा करने और युवाओं के सशक्तीकरण के लिए बेहतर उपाय सुझाने का मौका मिलता है। 2017–18 के दौरान इस तरह के 300 से भी ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए गए और इनमें 2,06,000 से भी अधिक युवाओं ने भाग लिया।

युवा आदर्श ग्राम विकास कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य चुनिंदा जिलों में एक गांव को युवाओं द्वारा युवाओं के लिए आदर्श गांव की तरह विकसित करना है। इससे जुड़ी गतिविधियों में गांव को खुले में शौच की समस्या से पूरी तरह मुक्त करना, 100 प्रतिशत प्रतिरक्षण, प्राथमिक स्कूलों में शत–प्रतिशत बच्चों का दाखिला, सफाई, स्वास्थ्य सुविधाएं, सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाना आदि है। 2017–18 के दौरान (31–12–2017) तक यह साल भर का कार्यक्रम है। इसे 78 चुनिंदा जिलों में प्रारम्भ किया गया है।

आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम (टीवाईईपी)

गृह मंत्रालय की फंडिंग की मदद से हर साल इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम के तहत नक्सलवाद और माओवाद प्रभावित क्षेत्रों के आदिवासी युवाओं को देश के बाकी हिस्सों में ले जाया जाता है, ताकि वे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विकास संबंधी गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल कर सकें। साथ ही, देश के बाकी हिस्सों के लोगों से उनका भावनात्मक रिश्ता विकसित हो सके। साल 2017–18 के दौरान 2,000 से भी ज्यादा आदिवासी युवाओं के लिए 10 ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

एक भारत श्रेष्ठ भारत (अंतरराज्यीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम)

प्रधानमंत्री ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 140वीं जयंती पर 31 अक्तूबर 2015 को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान की घोषणा की थी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हमारे देश की विविधता में एकता की विशेषता का गुणगान करना, पारंपरिक तौर पर लोगों के बीच मौजूद भावनात्मक संबंधों को और मजबूत करना, राज्यों के बीच साल भर की सुनियोजित गतिविधियों के द्वारा देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच गहरा जुड़ाव पैदा कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। इसके तहत प्रत्येक राज्य की समृद्ध विरासत और संस्कृति, परंपरा और रीति–रिवाजों को प्रदर्शित करना, ताकि लोग भारत की विविधता को समझें और उसकी कद्र करें। इस कार्यक्रम के प्रशासनिक समन्वय की जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पास है।

नेहरू युवा केंद्र ने साल 2017–18 के लिए 15 जोड़ी राज्यों में अंतरराज्यीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम एक भारत श्रेष्ठ भारत शुरू किया है, जिनमें तेलंगाना और हरियाणा, केरल और हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु और जम्मू–कश्मीर, ओडिशा और महाराष्ट्र, झारखंड और गोवा, कर्नाटक और उत्तराखंड, मेघालय और उत्तर प्रदेश, सिक्किम और दिल्ली, मणिपुर और मध्य प्रदेश आदि की जोड़ी शामिल हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक समन्वय की तरफ बढ़ने का अच्छा प्रयास है।

अन्य गतिविधियां

नेहरू युवा केंद्र संगठन अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर कई अन्य गतिविधियों में भी सक्रिय रहता है। मसलन पौधा रोपण, रक्तदान कैंप, बच्चों का प्रतिरक्षण, मां का प्रतिरक्षण, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन इत्यादि। हाल में यह मौजूदा स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप में भी शामिल रहा है, जिसके तहत युवा स्वच्छता से जुड़े मुद्दों, स्वास्थ्य आदि पर 100 घंटों का स्वैच्छिक कार्य करेंगे। यह काम पेय जल और सफाई मंत्रालय के तत्वावधान में होगा। इसी तरह, जल संसाधन मंत्रालय के तहत नेहरू युवा केंद्र संगठन से जुड़े युवा गंगा सफाई अभियान के तहत नमामी गंगे कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं। संगठन भारत में विविधता में एकता के प्रयास को सफल बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

एनएसएस की शुरुआत 1969 में हुई थी और इसका मुख्य उद्देश्य स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा के जरिए युवा छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व और चरित्र को निखारना है। इसका उद्देश्य 'सेवा के जरिए शिक्षा' है।

एनएसएस का सैद्धांतिक आधार महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित है। जाहिर तौर पर इस संगठन का आदर्श वाक्य 'मैं नहीं, लेकिन आप' हैं। इसे 1969 में 37 विश्वविद्यालयों में शुरू किया गया था और उस वक्त इससे जुड़े कार्यकर्ताओं की संख्या लगभग 40,000 थी। फिलहाल एनएसएस के पास 36.6 लाख कार्यकर्ता हैं और इसकी 36, 695 इकाइयां हैं, जो 391 विश्वविद्यालयों, 2 परिषदों और 16,278 उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में फैली हैं।

एनएसएस का खाका इस तरह से तैयार किया गया है कि हर शैक्षणिक संस्थान इसके दायरे में आ जाएं और कम से कम एक शिक्षक (कार्यक्रम अधिकारी के तौर पर तैनात) की अगुआई में 100 छात्र–छात्राओं (आम तौर पर) की एक इकाई हो। साथ ही एनएसएस की इकाई अपनी गतिविधियों के लिए किसी गांव या झुग्गी को गोद ले। एनएसएस के प्रत्येक कार्यकर्ता को दो साल की अवधि में हर साल कम से कम 120 घंटों की सेवा देनी पड़ती है यानि दो साल में 240 घंटे की सेवा। इसके अलावा, प्रत्येक कार्यकर्ता को 7 दिनों की अवधि के विशेष कैंप में हिस्सा लेना पड़ता है, जिसका आयोजन गोद लिए गांव या शहरी झुग्गी में एनएसएस की इकाई की तरफ से किया जाता है।

एनएसएस के तहत आने वाली गतिविधियों की प्रकृति

एनएसएस की मुख्य गतिविधि सामुदायिक सेवा उपलब्ध कराना है। समुदाय की जरूरतों के हिसाब से गतिविधियों की सामायिक प्रकृति विकसित होती रहती है। एनएसएस के कार्यकर्ता जिन कुछ क्षेत्रों में काम करते हैं, उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और सफाई, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, महिलाओं की हालत सुधारने से जुड़े कार्यक्रम, उत्पादन आधारित कार्यक्रम, आपदा आदि की हालत में राहत और पुनर्वास शामिल हैं। इसके अलावा, एनएसएस के कार्यकर्ता गणतंत्र दिवस परेड, एडवेंचर कैंप, राष्ट्रीय एकता कैंप और उत्तर–पूर्व एनएएस उत्सव, 'सुविचार' और राष्ट्रीय युवा उत्सव के दौरान 'युवा सम्मेलन' स्वैच्छिक गतिविधियों के कुछ उदाहरण हैं।

स्वैच्छिक समाज सेवा के कुछ जरूरी फायदे हैं। इससे युवाओं को समुदाय, उसके आसपास के परिवेश और समस्याओं और फायदों के बारे में जानने और समझने में मदद मिलती है। यह किसी शख्स के जमीनी अनुभव को बढ़ाता है, जिससे किसी समस्या या हालात के विश्लेषण में तुलनात्मक रुख विकसित करने में मदद मिलती है। एक बार खुद से जमीनी हकीकत को देख लेने के बाद युवा के पास उस मसले का व्यापक नजरिया विकसित होगा। इससे किसी युवा को तर्कसंगत नजरिया अपनाने और निष्पक्ष होने में भी मदद मिलती है। वह इस बात को समझना शुरू कर देता है कि कहीं पर हालात उस अन्य जगह से पूरी तरह उलट हो सकते हैं, जिसे उसने देखा है और हालात के हिसाब से दोनों सच हो सकते हैं। इससे उस युवा को दूसरों की राय की कद्र करना आता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि स्वैच्छिक सेवा 'भावनात्मक पहलू' को बेहतर बनाने में मददगार है, जो किशोरावस्था से वयस्क बनने के दौरे में होने वाली दिक्कतों और चुनौतियों से निपटने में अहम भूमिका अदा करता है। एन.एस.एस. कार्यकर्ताओं की कुछ गतिविधियों के उदाहरण इस बात को प्रदर्शित करते हैं।

गिरिविकास परियोजना

आदिवासी समुदाय को राष्ट्रीय मुख्यधारा के साथ जोड़ने में शिक्षा एवं साक्षरता अहम भूमिका निभा सकती है। इस बात को महसूस करते हुए नेहरू युवा केंद्र पलक्कड द्वारा जिला प्रशासन की मदद से प्रयोग के आधार पर गिरिविकास परियोजना को शुरू किया गया। पलक्कड के मलमपुज्हा गांव में 1.5 एकड़ का गिरिविकास कैंपस मौजूद है, जिसमें अकादमिक और प्रशासनिक ब्लॉक, लड़कियों और लड़कों का छात्रावास मौजूद है। केरल राज्य जनजातीय विकास विभाग ने इस प्रोजेक्ट को मदद उपलब्ध कराई है। इस परियोजना के तहत बारहवीं फेल आदिवासी छात्रों को पर्यावरण, शैक्षणिक और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। इसका मकसद उन्हें 10 महीने की आवासीय कोचिंग देकर उन्हें परीक्षा पास करने के लिए सक्षम बनाना है। इसका अन्य मकसद जनजातीय समुदाय के लोगों के दिमाग से हीनता की भावना को निकालना, रहन–सहन के अहम पहलुओं मसलन स्वच्छता, अनुशासन और कड़ी मेहनत की आदत विकसित कर उनके व्यक्तित्व को बेहतर बनाना भी है।

छात्र–छात्राओं को नियमित पाठ्यक्रम के अलावा अंग्रेजी और कंप्यूटर के बारे में भी पढ़ाया जाता है। साथ ही, योग, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया जाता है। इससे जुड़े कैंपस में छात्र–छात्राओं को सामाजिक विचारकों, साहित्यकारों, राजनेताओं और अधिकारियों के व्याख्यान भी सुनने का मौका मिलता है और वे उनके साथ संवाद भी कर सकते हैं। गिरिविकास परियोजना के द्वारा आदिवासी व लड़के और लड़कियों को बारहवीं की परीक्षा देने और पास होने के मामले में 88 प्रतिशत आंकड़ा हासिल करने में मदद मिली।

ड्रग के गलत इस्तेमाल और शराब की आदत को लेकर रोकथाम

इसे एक साल की पायलट परियोजना के तौर पर लागू किया गया है। इसके लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रहा है। इस परियोजना को पंजाब के 10 जिलो के 75 ब्लॉक के तहत आने वाले 3,000 गांवों और मणिपुर के 7 जिलों के 25 ब्लॉक के तहत आने वाले 750 गांवों में लागू किया गया। इस परियोजना में किशोरों और युवाओं, आसानी से नशे का शिकार बनने वाले समूहों के अलावा उनके परिवार और समुदाय के सदस्यों पर ध्यान दिया गया और गांव

आधारित युवा क्लबों, महिला समूहों, ग्राम पंचायतों स्थानीय राजनीतिक और धार्मिक नेताओं आदि के जरिए विभिन्न संबंधित पक्षों के लिए सहयोग जुटाया गया, ताकि ड्रग और शराब की लत जैसी समस्या से एक साथ निपटा जा सके। इस परियोजना का मुख्य मकसद जागरूकता पैदा करना, संबंधित लोगों को अल्कोहल और ड्रग पर निर्भरता के दुष्परिणामों और इसकी रोकथाम की प्रणालियों के अलावा इस सिलसिले में पेशेवर मदद के बारे में शिक्षित करना है, ताकि नशे के शिकार लोगों के लिए सेहतमंद और सार्थक जिंदगी का रास्ता तैयार हो सके।

इस परियोजना के तहत स्थानीय गांव से जुड़े युवा क्लब के 37,500 प्रशिक्षित सदस्यों ने 3,75,000 युवाओं को जागरूक किया और 62,654 ऐसे लोगों की पहचान की, जो शराब या ड्रग की लत के शिकार थे। इसके अलावा, ड्रग और शराब की लत और उसके परिणामों की समस्या से निपटने के लिए गांव के स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया गया, सूचनाएं मुहैया कराई गई और समुदायों को प्रेरित करने का काम किया गया।

नमामि गंगे और युवा

नेहरू युवा केंद्र संगठन ने प्रदूषण को कम करने, राष्ट्रीय नदी गंगा को फिर से बेहतर बनाने के मकसद से जागरूकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय गंगा सफाई मिशन के साथ 8 जून 2015 को एमओयू पर हस्ताक्षर किए थे। संगठन इसी एजेंडे के हिसाब से 'नमामि गंगे कार्यक्रम में युवाओं की सहभागिता' शीर्षक से परियोजना पर काम कर रहा है।

इस परियोजना का उद्देश्य स्थानीय युवाओं की प्रशिक्षित टीम तैयार करना, जीवन के तमाम क्षेत्रों से लोगों को इकट्ठा कर उन्हें इस मुद्दे के प्रति संवेदनशील बनाना, जागरूकता पैदा करना और लक्षित समूहों को प्रदूषित गंगा के परिणामों और असर के बारे में शिक्षित करना और मौजूदा सरकारी योजनाओं व गंगा की सफाई से जुड़ी सेवाओं के बारे में जानकारी मुहैया कराना है। फिलहाल इस परियोजना के दायरे में गंगा तट से जुड़े 4 राज्यों के 29 जिलों के 1,203 ग्राम पंचायत और 2,336 गांव शामिल हैं। इन 4 राज्यों में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। परियोजना के तहत गंगा नदी के तट पर 2,426 युवा क्लब बनाए गए हैं और 13,000 से भी ज्यादा गंगा दूत इस पर काम करेंगे।

पानी की गुणवत्ता का मसला

करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड के एनएसएस कार्यकर्ताओं ने गोद लिए गए गांव में पीने और अन्य कामों में उपयोग किए जाने वाले पानी के साधन की जांच करने की पहल की। यह जांच कॉलेज की रसायन शास्त्र की प्रयोगशाला में की गई। रिपोर्ट जिला प्राधिकरण को सौंपी गई। जिला प्राधिकरण ने पानी की फिर से जांच की और प्रदूषण को कम करने और गांव वालों को सुरक्षित और साफ पानी उपलब्ध कराने के लिए जरूरी उपाय किए गए।

अलगप्पा चेट्टियार गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, कराईकुडी, तमिलनाडु (एनएसएस)

इस कॉलेज की एनएसएस यूनिट ने पानी के चौनलों और अतिक्रमण का सर्वेक्षण कर पलवनगुड़ी गांव में सभी टैंकों को चौनल से जोड़ने की संभावनाओं का विश्लेषण किया। इसने सिविल इंजीनियरिंग विभाग की सहायता से पलवनगुड़ी गांव की मैपिंग की और स्थानीय लोगों की मदद से गड्ढा खोदने, अतिक्रमण, मलबा आदि हटाने का काम किया गया। आखिरकार यह पहल रंग लाई और टैंक बारिश के पानी से भर गए। सभी चौनल अब पानी के प्रवाह के अनुकूल कर दिए गए हैं। इसने गांव में बारिश का पानी इकट्ठा करने का स्थायी समाधान पेश किया। (दिनामालार अखबार के मदुरै संस्करण में प्रकाशित)

सिद्धि उत्थान परियोजना (एनएसएस)

सिद्धि मुस्लिम समुदाय अहमदाबाद में शहरी झुग्गी सिद्धि बस्ती में रहता है। सरसपुर आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज की एनएसएस इकाई ने इस सिद्धि बस्ती को गोद लिया, जहां एक दशक से भी ज्यादा से कचरा फेंकने का ठिकाना था और इस इलाके में रहने वाले लोगों का जीवन काफी कठिन था। सरसपुर कॉलेज के एनएसएस कार्यकर्ताओं ने इस इलाके की गंदगी और कचरे को साफ किया, साफ–सफाई का अभियान शुरू करते हुए इस इलाके को साफ–सुथरा बना दिया। एनएसएस कार्यकर्ताओं की 4 साल की लगातार कोशिशों के कारण सिद्धि शहरी झुग्गी इलाके को कचरा मुक्त इलाका बनाया जा सका। इससे सिद्धि बस्ती के 300 लोगों और पास के कॉलेज के 2,000 से भी ज्यादा छात्रों को फायदा हुआ। सरसपुर आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, अहमदाबाद के एनएसएस कार्यकर्ताओं ने अपने घरों को साफ किया और उनकी रंगाई–पुताई की, शौचालयों को दुरुस्त किया और उनको काम लेने लायक बनाया। इसके अलावा, एनएसएस की इस इकाई ने उनके लोक नृत्य 'सिद्धिधमाल' को भी बढ़ावा देने में मदद की, लड़कियों समेत 200 से भी ज्यादा सिद्धि के छात्र–छात्राओं के लिए कंप्यूटर क्लास सिद्धि बस्ती के पास 'खेल–खेल में पढ़ाई' जैसे कार्यक्रम के तहत किए गए, जिससे सिद्धि लड़कियों, महिलाओं और बच्चों को अपने घर में ही सिखाने वाले मजेदार गेम और सांस्कृतिक गतिवधियों से काफी कुछ सीखने में मदद मिली।

एलईडी बल्ब कैंप (एनएसएस)

व्यावसायिक उच्च माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की एनएसएस इकाइयों ने केरल के 14 जिलों में 2 दिनों के 308 समर कैंपों का आयोजन किया। इसमें एलईडी बल्ब बनाने जैसी अलग–अलग परियोजनाओं और कार्यक्रमों पर काम किया गया। इसके अलावा, खराब और फेंक दिए गए एलईडी बल्बों की मरम्मत के लिए घरों से इकट्ठा किया गया, सामाजिक–आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को एलईडी बल्बों का वितरण किया गया और गांव वालों के बीच ऊर्जा की खपत को लेकर जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। केरल ऊर्जा प्रबंधन केंद्र ने एलईडी बल्ब को बनाने और उसकी मरम्मत से जुड़े प्रशिक्षण के लिए 4 घंटे का समय दिया। इन कैंपों में 15,400 वॉलंटियर और 308 परियोजना अधिकारी शामिल रहे।

निष्कर्ष

सामाजिक मूल्यों को विकसित करने एवं सामुदायिक गतिविधियों में युवाओं की सहभागिता बढ़ाने में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं नेहरू युवा केन्द्र संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इन कार्यक्रमों को क्रियान्वयन के दौरान वृक्षा रोपण, राष्ट्र सेवा, एकता, स्वावलम्बन, स्वच्छता, रोजगार, स्वास्थ्य, समसामयिक समस्याओं के समाधान, जल संरक्षण, शिक्षा का विस्तार, राज्य एवं केन्द्र सरकार के फ्लेगशीप कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता के साथ है। सामाजिक मूल्यों को विकसित करने परम्पराओं को हस्तांतरित करने एवं उनके समाजोपयोगी पहलुओं को जन सहभागिता के साथ प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वार्षिक रिपोर्ट 2017–18 युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय, भारत सरकार।
2. https//yas.nic.in

3. राजस्थान पत्रिका जयपुर, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित।
4. राष्ट्रीय युवा नीति – 2014
5. जन सत्ता – नई दिल्ली
6. शर्मा जी.एल. सामाजिक मुद्दे 2015 रावत पब्लिकेशन, जयपुर, नई दिल्ली।